The Central School, Dubai

कार्यपत्रिका

पठित पद्यांश

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए;

I कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों,
साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया,
कट गए सिर हमारे तो कुछ गम नहीं
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया,
मरते-मरते रहा बाँकपन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों 1
ज़िंदा रहने के मौसम बहुत है मगर,
जान देने की रुत रोज़ आती नहीं,
हुस्न और इश्क दोनों को रुसवा करे
वो जवानी जो खूं में नहाती नहीं,
आज धरती बनी दुल्हन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों 2

(1) 'सर हिमालय का हमने झुकने दिया' - पंक्ति में 'सर' किसका प्रतीक है ?

(i) सावभिमान (ii) सिर (iii) घमंड (iv) पराक्रम

(2) पद्यांश में 'बाँकपन'- शब्द का अर्थ है ?

(i) वीरता का भाव (ii) अशुद्धता (iii) छवि (iv) बेमिसालपन

(3) धरती के दुल्हन बनने से तात्पर्य है ;

(i) बलिदान के लिए तैयार होना
(ii) मरने की कोशिश करना
(iii) अपने देश की लाज को दुश्मनों से बचा कर रखना
(iv) लोगों को दिखाना कि हम मरने से नहीं डरते

(4) सर पर कफ़न बांधने का अर्थ है -

(i) बलिदान के लिए तैयार होना
(ii) मरने की कोशिश करना
(iii) अपने लिए जान की बाज़ी लगाना
(iv) लोगों को दिखाना कि हम मरने से नहीं डरते

II 'मनुष्य मात्र बंधु है' यही बड़ा विवेक है,
पुराण पुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।
अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

(1) 'मनुष्य मात्र बंधु' से क्या तात्पर्य है ?
(क) मनुष्य मात्र को परस्पर भाई-बंधु समझना
(ख) मनुष्य मात्र को अलग-अलग समझना
(ग) मनुष्य मात्र के अलग-अलग कर्म होना
(घ) मनुष्य मात्र के द्वारा परिश्रम किया जाना

(2) प्रत्येक मनुष्य अपना बंधु कैसे है ?
(क) एक राष्ट्र में जन्म लेने से
(ख) एक गाँव में जन्म लेने से
(ग) एक जैसा खाना खाने से
(घ) एक परमात्मा की संतान होने से

(3) मानव मात्र में बाहरी अंतर क्यों दिखाई देता है ?
(क) भिन्न जलवायु के कारण
(ख) मानव की कर्म भिन्नता के कारण
(ग) माता-पिता के भिन्न प्रकृति के कारण
(घ) भिन्न देशों में जन्म के कारण

(4) सबसे बड़ा अनर्थ है -
(क) भाई का भाई से लगाव
(ख) भाई का भाई से अलगाव
(ग) भाई-भाई में घृणा का भाव
(घ) भाई-ही-भाई का दुख दूर न करें

III पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश
पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश !
मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्र-दृग-सुमन फार

अवलोक रहा है बार-बार
नीचे जल में निज महाकार
जिसके चरणों में पड़ा ताल
दर्पण-सा फैला है विशाल !
गिरी का गौरव गाकर झर-झर
मद में नस-नस उत्तेजित कर
मोती की लड़ियों से सुंदर
झरते हैं झाग भरे निर्झर !

(1) पर्वत का आकार कैसा है -

(क) विशाल (ख) मेखलाकर (ग) गौरव (घ) महाकार

(2) 'सहस्र-नेत्र' से तात्पर्य है -

(क) पुष्प रूपी आँखें (ख) हज़ार (ग) सुमन (घ) आँखें

(3) पर्वत के चरणों में क्या पड़ा है -

(क) मोती (ख) झाग (ग) निर्झर (घ) तालाब

(4) 'मोती की लड़ियों से सुंदर'- से क्या तात्पर्य है ?

(क) मोती (ख) झाग (ग) निर्झर (घ) तालाब

(4) ऐसी बाणी बोलिये, मन का आपा खोई।
अपना मन सीतल करै, औरन कों सुख होई ।।
निंदक नेड़ा रखिए, आँगनी कुटी बंधाई।
बिन साबण पाँणी बिना, निरमल करै सुभाइ।।

(1) कवि ने कैसी वाणी का प्रयोग करने को कहा है ?

(क) हल्की (ख) शीतल (ग) मधुर (घ) तीव्र

(2) यहाँ 'आपा' का आशय है ?

(क) आप (ख) अहंकार (ग) नियंत्रण (घ) सुध-बुध

(3) कवि ने किसे समीप रखने की सलाह दी है ?

(क) प्रशंसक को (ख) निंदक को (ग) शुभचिंतक को (घ) बंधुबांधव को

(4) 'निरमल करै सुभाई' - का आशय है ?

(क) सुबह को निरमल करना (ख) स्वभाव को निर्मल करना
(ग) निर्मलता को प्यार करना (घ) स्वच्छता बनाए रखना

(5) 'आँगनी कुटी बंधाई'- रखने का भाव है ?

(क) आँगन में बसाना (ख) कुटिया में रखना
(ग) निर्मलता को प्यार करना (घ) बांधकर ले जाना

IV उड़ गया, अचानक लो भूधर
फड़का अपार पारद के पर !
रव शेष रह गए हैं निर्झर !
है टूट पड़ा भू पर अंबर !
धँस गए धरा में सभय शाल !
उठ रहा धुआँ, जल गया ताल !
-यों जलद-यान में विचर-विचर
था इन्द्र खेल इंद्रजाल ।

(1) अचानक कौन उड़ता हुआ प्रतीत होता है ?

(क) झरना (ख) पहाड़ (ग) बादल (घ) पक्षी

(2) वर्षा ऋतु में पर्वत प्रदेश में किनका शोर सुनाई देता है ?

(क) नदियों का (ख) झरनों का (ग) वर्षा का (घ) पक्षियों का

(3) भय के कारण कौन धरती में धँसे हुए प्रतीत होते हैं ?

(क) ताल के वृक्ष (ख) घाटियों के वृक्ष

(ग) पर्वतों के वृक्ष (घ) शाल के वृक्ष

(4) 'जलद-यान में विचर-विचर' - का आशय है ?

(क) वर्षा रूपी यान में सवार होकर घूमना

(ख) बादल रूपी यान में सवार होकर घूमना

(ग) जल्दी-जल्दी रूपी यान में सवार होकर घूमना

(घ) इन्द्र के यान में घूमना-फिरना

(5) जादू का खेल कौन दिखा रहा है ?

(क) भूधर (ख) अंबर (ग) निर्झर (घ) इन्द्र